वर्ष-9 अंक-5, मई 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

विजयोत्सव 2018:पटना

छाया - शैलेन्द्र कुमार

वर्ष - 9, अंक-5, मई 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
चैतन्य प्रसाद

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

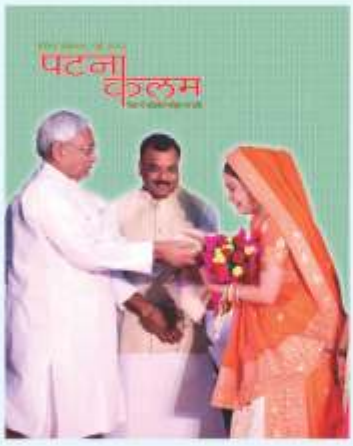

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

चंद्रगुप्त से लेकर आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका, या फिर आजादी के बाद जयप्रकाश नारायण की भूमिका के माध्यम से बिहार ने देश के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ जोडे हैं। ऐसा ही स्वर्णिम पृष्ठ बाबू कुंवर सिंह ने भी अपनी बहादुरी और आत्मबल से जोडे। अंग्रेजों से मुकाबले के लिए 80 वर्ष के उस वृद्ध के आत्मबल की आज हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं कि अंग्रेजों की गोली लगने पर उन्होंने अपना हाथ अपनी ही तलवार से काट लेने का निर्णय लिया, सिर्फ इसलिए कि अपने शरीर में उन्हें विदेशी गोली भी स्वीकार नहीं थी। वास्तव में ज्ञान की बात होती है तो बिहार की बात होती है, लेकिन बहादुरी और आत्मसम्मान का कोई भी इतिहास बाबू कुंवर सिंह के बगैर पूरा नहीं हो सकता।

गुरु गोविन्द सिंह को शहीदी परंपरा में अद्वितीय मानते हैं,उन्होंने अपने चारों पुत्रों को शहादत के लिए समर्पित कर दिया था। बाबू कुंवर सिंह को भी हम उसी परंपरा में स्मरण करते हैं। बाबू कुंवर सिंह के दो पुत्र हुए और दोनों ही स्वाधीनता संग्राम में शहीद हो गए, दल भंजन सिंह जो 5 नवंबर 1857 को कानपुर के युद्ध में शहीद हुए जबकि वीर भंजन सिंह जो 8 अक्टूबर 1857 को बाँदा के युद्ध में शहीद हुए। शहादत का यह जौवट हमारे लिए सदा अनुकरणीय रहेगा।

अंग्रेजो की तुलना में बाबू कुँवर सिंह के पास साधन सीमित थे परन्तु वे निराश नहीं हुए। उन्होंने क्रांतिकारियों को संगठित किया। अपने साधनों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने छापामार युद्ध की नीति अपनाई और अंग्रेजों को बार-बार हराया। कुँवर सिंह ने जगदीशपुर से आगे बढ़कर गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़ आदि जनपदों में छापामार युद्ध करके अंग्रेजों को परास्त किया। वे युद्ध अभियान में बांदा, रीवां तथा कानपुर भी गये। बाबू कुंवर सिंह के युद्धनीति की विशेषता सबों को साथ लेकर चलने की थी। उन्हें अहसास था कि अंग्रेजों की बडी और मजबूत सेना का मुकाबला अलग अलग लडकर नहीं किया जा सकता, उन्होंने अलग-अलग स्थानों पर चल रहे विरोध को एक सूत्र में बांधने की रणनीति अपनाई। बाबू कुंवरसिंह को जब हम याद करते हैं तो उनके धर्मनिरपेक्ष विचारों को भी नहीं भूल सकते। उन्होंने सिद्धांत रुप में नहीं वास्तव में व्यवहार में इसे स्वाकार किया और अपनी सेना और सत्ता में मुस्लिमों को महत्वपूर्ण जवाबदेही सौंपी।

आज जब बिहार सम्मान की बात हो रही है, स्वभाविक है वीर कुंवर सिंह हमें प्रेरणास्त्रोत के रूप में सामने दिखते हैं। हमें गर्व है कि कला संस्कृति विभाग ने उनकी बहादुरी और गौरवशाली इतिहास को विजयोत्सव के रूप में अविस्मरणीय बनाने की महती जवाबदेही निभायी। राजधानी पटना तथा उनकी जन्मस्थली जगदीशपुर में आयोजित कार्यक्रमों में उनके दौर के इतिहास को रिक्रिएट कर पुनः लोगों को उस इतिहास से जोड़ने की कोशिश की गई। इस अवसर पर चाक्षुष कला, प्रदर्श कला तथा खेल जैसे तमाम विधाओं के सहयोग से तीन दिनों के लिए पूरे राज्य में बहादुरी और आत्मसम्मान की गाथाएं गूंजती रहीं।

चैतन्य प्रसाद
(चैतन्य प्रसाद)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

वीर कुंवर सिंह 160 वर्ष

विजयोत्सव

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने घोषणा की है कि नई पीढ़ी को आजादी के असाधारण योद्धा बाबू वीर कुंवर सिंह के शौर्य से परिचित कराने के लिए उनकी जीवन गाथा स्कूलों में पढ़ाई जाएगी। मुख्यमंत्री ने बाबू वीर कुंवर सिंह की 160वीं जयंती पर उनकी जन्मस्थली भोजपुर जिले के दुलौर में तीन दिवसीय विजयोत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि उनसे जुड़ीं ऐतिहासिक धरोहरों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने इसके लिए 19 करोड़ रुपये लागत वाली परियोजनाओं का शिलान्यास, जबकि छह करोड़ रुपये लागत से तैयार परियोजनाओं का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबू वीर कुंवर सिंह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई के आजादी के दीवानों को संगठित किया था, जिनमें सभी धर्म-जातियों के लोग शामिल थे। उन्होंने कहा कि आज भी समाज में प्रेम, शांति और सद्भाव के साथ विकास के लिए संघर्ष करना होगा। भोजपुर में बाबू वीर कुंवर सिंह की धरोहरों को प्रेरणास्रोत के रूप में विकसित कर भावी पीढ़ी को सामाजिक समरसता का संदेश दिया जा सकता है।

इस मौके पर उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने बाबू वीर कुंवर सिंह की अंग्रेजों के साथ हुई लड़ाई में सभी जाति-धर्म के लोगों को साथ लेकर चलने की प्रवृति से सीख लेने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि बाबू वीर कुंवर सिंह की तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी सबका साथ और सबका विकास का नारा देते हुए देशवासियों को संगठित करने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार सर्वाधिक संघर्षशील और जुझारू राज्य है। यहां के लोगों ने आजादी की लड़ाई से लेकर आपातकाल के जुल्म और अन्याय के खिलाफ संघर्ष में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसके लिए बिहार को भारी कीमत भी चुकानी पड़ी। उन्होंने कहा कि अंग्रेज 1857 की लड़ाई को भारतीय संग्राम की पहली लड़ाई मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने इसे सिपाही विद्रोह की संज्ञा दी। बिहारियों के पराक्रम और शौर्य से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने उन क्षेत्रों और जाति विशेष के लोगों को सेना में भर्ती करना बंद कर दिया। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि 1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजी सरकार का ध्यान मुख्य रूप से सेना और प्रशासन पर था। वर्ष 1886 में सरकार की कुल आय 47 करोड़ रुपये थी। इसमें से शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के मद में मात्र 2 करोड़ रुपए, जबकि सेना पर 19 करोड़ और प्रशासन पर 17 करोड़ रुपए खर्च किए जाते थे। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री आरके सिंह, उद्योग मंत्री जय कुमार सिंह, पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार, प्रभारी जिला मंत्री बिनोद कुमार सिंह आदि भी शामिल हुए। अध्यक्षता कला एवं संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमारऋषि ने, जबकि संचालन प्रो.रणविजय कुमार ने किया।

इसके पूर्व बाबू कुंवर सिंह के 1858 में बलिदान की गाथा को याद दिला देने वाली शोभायात्रा ऐतिहासिक शिवपुर गंगा घाट से निकाली गयी। कला व संस्कृति व युवा विभाग मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने शोभायात्रा को रवाना किया। पुरातन संस्कृति के अनुसार काफी शुभ माने जाने वाले सिंगा धुन बजाकर निकली। शिवपुर घाट से लगभग 30 किलोमीटर की दूर तय कर जगदीशपुर पहुंची। शोभायात्रा के दौरान शौर्य को सलाम करने के लिए जगह-जगह लोगों की भीड़ जुटी रही। महानायक के सम्मान में सरकारी स्तर पर इलाके में पहली बार निकली भव्य व आकर्षक शोभायात्रा कई मायने में महत्वपूर्ण रही। महानायक की झांकी यूपी के बलिया से शिवपुर घाट पहुंची। इसके बाद शिवपुर घाट से रथ पर शोभा यात्रा निकली। । हाथी, घोड़ा, ऊंट, भान सैनिक व एक से बढ़कर एक झांकियों से सजी शोभायात्रा जगदीशपुर पहुंचते ही अद्भुत व अद्वितीय बन गया। शोभायात्रा पर जगह-जगह फूलों की बारिश की गयी। किला परिसर में शोभायात्रा के पहुंचने पर मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री ने काफी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

विजयोत्सव समारोह के दौरान दुलौर गांव में बनाए गये वीर कुंवर ग्राम के खेल ग्राउंड में खिलाड़ियों ने अपना हुनर दिखाना शुरू किया तो महानायक के गुरिल्ला युद्ध की याद ताजा हो गयी। खेल महोत्सव में उन्हीं खेलों का आयोजन किया गया है, जिनसे कुंवर सिंह को गहरा लगाव था और उस विधा में उन्हें महारत हासिल थी। मंगलवार को कबड्डी, कुश्ती, घुड़सवारी, भाला फेंक व तीरंदाजी प्रतियोगिता हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साह से भाग लिया। वहीं महिला महोत्सव में महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम हुए।

दुलौर में वाद-विवाद और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें चयनित स्कूली बच्चों ने काफी उत्साह व उमंग के साथ भाग लिया।

कुंवर सिंह के विजयोत्सव पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना में भी राज्य में चलने वाले तीन दिवसीय समारोह का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने सबसे पहले पटना के शहीद वीर कुंवर सिंह पार्क में उनकी प्रतिमा का लोकार्पण किया। माल्यार्पण के बाद कुंवर सिंह की भित्तिचित्रों का अनावरण भी किया। पहले यह प्रतिमा आर ब्लॉक गोलंबर पर लगी थी जिसे अब हार्डिंग पार्क में शिफ्ट कर दिया गया है। विजयोत्सव के मौके पर बाबू वीर कुंवर सिंह पार्क में लेजर शो के माध्यम से बाबू कुंवर सिंह के शौर्य गाथा को बखूबी दिखाया गया। पार्क में लगे लेजर शो का उद्घाटन भी किया गया। पार्क में मौजूद दर्शकों ने लेजर शो के माध्यम से कुंवर सिंह की शौर्य गाथा को देख आनंदित हुए। 32 मिनट तक चलने वाले शो में कुंवर सिंह के जीवन और शौर्य का बखान है। अंग्रेजों के साथ उनका युद्ध हो, लोगों में आजादी की पहली क्रांति के लिए जोश भरना हो गया फिर उनके किए गए सामाजिक कार्य, इन सभी का विवरण लेजर शो में दिखाई दिया। बड़ी संख्या में दर्शक भी वीर कुंवर सिंह पर आधारित लेजर शो देखने पहुंचे।

त्रिदिवसीय विजयोत्सव के अंतिम दिन बापू सभागार में बाबू कुंवर सिंह के अवदानों पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर से आए इतिहासकारों ने अकादमिक सत्र में अपने विचार रखे। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि जब कुंवर सिंह शासन चला रहे थे तो सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की थी। उन्होंने हर तबके का सहयोग प्राप्त किया। अगस्त, 1857 से 9 महीने का लांग मार्च करते हुए 22 अप्रैल को वह जगदीशपुर लौटे। वर्तमान सड़क मार्ग से यह दूरी 2380 किमी है। हमारा यह अभिप्राय है कि कुंवर सिंह ने बिहार के बाहर जो देशभर में किया, उसकी चर्चा आवश्यक है। आजादी की पहली लड़ाई में कुंवर सिंह की भूमिका पर कुछ पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। नई पीढ़ी इसके द्वारा पूरी बातों को जानेगी। मेरी इच्छा है कि इस संगोष्ठी से खास बात निकलकर सामने आए। उन सब चीजों को पाठ्यक्रम में शामिल कर बिहार के स्कूलों में बच्चों को कुंवर सिंह के बारे में जानकारी दी जाए। कहा- डुमरांव के एग्रीकल्चर कॉलेज का नाम वीर कुंवर सिंह के नाम पर रखा गया है। हार्डिंग पार्क का नाम भी वीर कुंवर सिंह आजादी पार्क कर दिया गया है। इसमें वीर कुंवर सिंह की मूर्ति लगाई गई है। नई पीढ़ी इन सब चीजों से प्रेरणा लेगी।

इस अवसर पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा विशेष रूप से प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने की।

सेमिनार के अकादमिक सत्र को संबित करते हुए इतिहासकर प्रो. रत्नेश्वर मिश्र ने कहा कि बाबू वीर कुंवर सिंह को हमलोग उनके शौर्य के लिए याद करते हैं। बाबू कुंवर सिंह की वीरता के अलावा उनके जीवन के अनेक अनछुए पहलूओं को नहीं जानते हैं। उन्होंने कहा कि बाबू कुंवर सिंह सभी धर्मो के लोगों को आपस में एकता और भाईचारे से रखने की त करते थे।

प्रो. निहाल नंदन सिंह ने कहा कि वीर कुंवर सिंह आक्रमक जरूर थे, मगर उनके अंदर मानवता थी। उनकी लड़ाई अंग्रेजी शासन व्यवस्था के खिलाफ थी। अंग्रेजों से लड़ाई के क्रम में यदि उनके बच्चे, महिलाएं या वृद्ध सामने आ जाते थे तो बाबू कुंवर सिंह उनकी सुरक्षा करते थे। डॉ. शशांक ने कहा कि आजादी की लड़ाई में वीर कुंवर सिंह ने बिहार की सीमा को लांघकर देश के कोने-कोने में गए। घोड़े की सहायता से उन्होंने करीब 3000 किमी की यात्रा की। 1857 की क्रांति में वे आरा होते हुए अवध के क्षेत्र तक पहुंच गए थे। प्रो. सलिल मिश्र ने कहा कि 1857 की क्रांति दुनिया का सबसे बड़ा शक्तिशाली संघर्ष था। बाबू कुंवर सिंह के साथ किसान, सिपाही हर वर्ग के लोग शामिल थे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रश्मि चौबे, प्रो. आई के चौधरी, प्रो. निहार नंदन सिंह, डॉ. अशोक अंशुमान,बाबू जगजीवन राम शोध संस्थान के निदेशक श्रीकांत ने भी अपने विचार रखे।

● नेहा कुमारी

कैनवास पर बिखरे वीरता के रंग

विजयोत्सव समारोह के लिए आरा के ऐतिहासिक किला और इसके परिसर का खुबसुरत रूप प्रदान किया गया था। किला परिसर में स्थित संग्रहालय को विकसित कर कुंवर सिंह के जीवन चरित व वीरता को चित्र व पेंटिग के माध्यम से प्रदर्शित करने हेतु वहां एक अस्थायी कलादीर्घा बनाई गई थी,जिसका अवलोकन मुख्यमंत्री,उपमुख्यमंत्री द्वारा किया गया।

इस कला दीर्घा में बिहार संग्रहालय में आयोजित कलाशिविर में खासतौर पर चित्रित पेंटिंग प्रदर्शित की गई थी,जिसमें दिल्ली,उत्तरप्रदेश, बिहार एवं कलकत्ता से 17कलाकारों ने भाग लिया था। इस कला शिविर में युवा चित्रकार राजू ने वीर कुंवर सिंह के दो शवीह चित्र चित्रफलक पर उकेरे।जिसमे उन्हें ओजपूर्ण स्वभिमानी पुरुष और कुशल योद्धा के रूप में स्पेचुला द्वारा चित्रित किया गया है। पहली नजर में ही यह चित्र प्रेक्षकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। विधान राही के चित्र फलक पर बाबू कुंवर सिंह को युद्ध-भूमि में घोड़े पर से अंग्रेज सैनिक को बर्छे से मारते हुए दर्शाया गया है तथा दूसरी कृति में युद्ध-भूमि में अंग्रेजी सेनाओं के बीच उनके पराक्रम को दर्शाया गया है।

कोलकाता के युवा चित्रकार सनातन डिंडा के चित्र फलक पर फटे पुराने कागज पर चित्रित बाबू कुंवर सिंह के चित्र पर माल्यार्पण दिखया गया है।इस कलाकृति के बारे में कलाकार का कहना है कि 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन के इस योद्धा को इतिहास में वह स्थान नही मिल पाया जिसके वे हकदार थे।इनकी दूसरी कृति में बाबू कुंवर सिंह के व्यक्तित्व और शौर्य का चित्रण प्रेक्षकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।युवा चितेरा सचिन्द्र नाथ झा के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह को डाकटिकटों पर दर्शाया गया है।दूसरी कलाकृति में उनके चित्र पर फूलों की माला डला दर्शाया गया है।ये चित्र प्रेक्षकों से सीधा सवाल करता है कि क्या उन्हें जन्मदिवस पर ही याद किया जाएगा?

युवा चितेरा सुनील विश्वकर्मा के चित्रफलक पर अंग्रेजी सेनाओं के बीच रणभूमि में कहर ढाते बाबू कुंवर सिंह को दिखाया गया है।दूसरी कलाकृति में नाव पर अपने योध्दाओं के सामने अंग्रेजी सैनिकों द्वारा अपने जख्मी दायें हाथ को तलवार से काटते हुए दर्शाया गया है।इसमें बाबू कुंवर सिंह की भाव भंगिमा में अदम्य साहस का परिचय मिलता है।युवा चितेरा निकिता बोई के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह के शवीह के साथ युद्ध के दृश्य रूपायित किये गए हैं।युवा मूर्तिशिल्पी प्रदीप कुमार पत्रा ने फाइबर माध्यम के मूर्तिशिल्प एवं चित्रफलक पर सृजित चित्र में बाबू कुंवर सिंह के शौर्य को महसूस किया जा सकता है।फराद हुसैन के चित्र फलक पर वीर कुंवर सिंह के शवीह के साथ घोड़े एवं फूलों को विम्ब के रूप में प्रयोग कर कलाकार ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि उनमें अदम्य साहस के साथ साथ सांस्कृतिक चेतना भी थी। चित्रकार चंदन चौधरी के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह के शवीह में एक प्रकार के ओज के साथ साथ पराक्रमी भाव के दर्शन होते हैं। विजेंदर शर्मा के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह के अदम्य साहस के सामने ब्रिटिश साम्राज्य के पतन को दर्शाया गया है। चित्रकार चुनाराम हेम्रम के चित्रफलक पर उकेरी गई चित्रकृति को देखने से ऐसा महसूस होता है कि लकड़ी पर उकेरी गई आकृतियाँ हैं। जिसमें बाबू कुंवर सिंह के शवीह के साथ युद्धभूमि को दर्शाया गया है। चित्रकार सिद्धार्थ के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह उनकी अपनी शैलीगत विशेषता के साथ दृष्टिगत है जिसमें नीले रंगों के साथ कोमल रंगों का संयोजन चित्र को चित्ताकर्षक बनाता है।

सुब्रतो गंगोपाध्याय ने जो बाबू कुंवर सिंह जी का शवीह सृजित किया है उसमें उन्हें राजसी ठाट-बाट के साथ चित्रित किया गया है। अर्पणा कौर के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह के व्यक्तिचित्र के साथ बहुत सारे तलवार ,गंगा की लहरें और तलवार लिए हाथ को विम्बों के रूप में प्रयोग कर कलाकार ने बाबू कुंवर सिंह की छमता का परिचय दिया है। हेमंत राव के चित्रफलक पर बाबू कुंवर सिंह को घोड़े के साथ हाथ में तलवार-ढाल लिए कोमलरंगों में चित्रित किया गया है। यह चित्र प्रेक्षकों को प्रभावित करता है। चित्रकार विनोद शर्मा के चित्रकृति में दृश्यांकन को प्रमुख स्थान दिया गया है।संजय कुमार के चित्रफलक पर काले रंग के पाउडर(साँस माध्यम) से श्वेत -श्याम रंग में बाबू कुंवर सिंह का व्यक्तिचित्र सृजित किया गया है।जिसमे कुंवर सिंह की भाव भंगिमा,उनके शौर्य और पराक्रम को महसूस किया जा सकता है।

भित्ति चित्रों में उभरा इतिहास

आजादी पार्क में 160वें विजयोत्सव समारोह के अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वीर कुंवर सिंह की अश्वारोही प्रतिमा को पुनर्स्थापित किया। उन्होंने वहां चहारदीवारी के एक हिस्से पर 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उनकी जीवनगाथा पर आधारित का भित्ति चित्र का अनावरण भी किया। अश्वारोही प्रतिमा पर माल्यार्पण कर वीर कुंवर सिंह को श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को निर्देश दिया कि पार्क की बाकी दीवारों पर भी बाबू वीर कुंवर सिंह से संबंधित चित्र बनाए जाए, ताकि अधिक से अधिक लोगों को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी मिल सके।

इन भित्तीचित्रों को कला संस्कृति विभाग द्वारा 'मृण्मय भित्तिशिल्प कला कार्यशाला' के अंतर्गत बनवाया गया था। कार्यशाला के संयोजक और उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान के उप विकास पदाधिकारी अशोक कुमार सिन्हा ने इस कार्यशाला के बारे में बताया कि –'इस कार्यशाला में तीस वरिष्ठ एवं उनके तीस सहयोगियों ने बाबू वीर कुंवर सिंह के जीवन से संबंधित तीस स्मारकीय मृण्मय भित्ति शिल्प गढ़े। कार्यशाला में भाग लेने वाले कलाकारों को बाबू कुंवर सिंह के जीवनवृत से संबंधित ऐतिहासिक पंद्रह महत्वपूर्ण घटना क्रम को दर्शाने के लिए विषय निर्धारित किये गए थे।इन सभी तीस मृण्मय भित्ति शिल्प में से पंद्रह पटना और पंद्रह जगदीशपुर में प्रदर्शन के लिए लगाए जाएंगे।'

इस मृण्मय भित्ति शिल्प कार्यशाला में विभिन्न पीढ़ियों के कलाकारों ने अपनी भागीदारी निभायी।जिनमें विनय पंडित, लाला पंडित, शत्रुघन प्रसाद सिंह, प्रमोद यादव, दिनेश कुमार, सन्यासी रेड, रश्मि सिंह, जगदीश पंडित, मुकेश कुमार कारण, रामूकुमार, श्रीमती नूतन, राजेश राम, वरिष्ठ कलाकार पद्मश्री ब्रह्मदेव पण्डित, उदय पंडित पिन्टू प्रसाद, शंकर कुमार पंडित, बीरबल पंडित, शम्भु पंडित, अरविंद कुमार, रजत घोष, अमरनाथ शर्मा, इंद्रदेव कुमार भारती, अनुप कुमार, सुनील कुमार, पंकज कुमार सिंह, मुकेश कुमार सिन्हा, अभय कुमार पंडित प्रमुख थे। बेहतर और समय पर कम को पूरा करने के लिए इन सभी कलाकारों की सहयोग हेतु युवा कलाकारों का सहयग प्रदान किया गया था, जिनमें अभिषेक कुमार, ममता केशरी, प्रदीप कुमार, शिवशंकर विश्वकर्मा, रुपेश कुमार, रुपा कुमारी, रिया शाह, सुशील कुमार, भोला कुमार, शंभू पंडित, रामविलास पंडित, नुतन कुमारी, विमलेश कुमार प्रजापति, अजय कुमार पंडित, ललन कुमार प्रजापति प्रमुख थे।

इन कलाकारों ने अपनी कला में बाबू कुंवर सिंह की बहादुरी, आत्मोत्सर्ग की भावना, उनके युद्ध कौशल के साथ उनके द्वारा अपने रियासत में खुशहाली के लिए उनके सद्प्रयास यथा वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, तालाब कि खुदाई, विद्यालय एवं मस्जिद निर्माण को समग्रता से दर्शाया गया था। कुछ म्यूरल में उनके राजकाल के सांस्कृतिक परिदृश्य को भी दिखाया गया था। एक में चौता एवं होली जैसे लोकगायन के प्रति रसिकता एवं उनकी सामाजिक सक्रियता को सर्व धर्म समभाव की प्रतिमूर्ति के रूप में बाबू कुंवर सिंह को दर्शाया गया है। एक तरफ वे जहाँ ताजिया के जुलूस को जितना मान सम्मान देते थे तो वहीं वे हिंदुओं के पर्व त्योहार में भी शामिल होते थे। कई कृतियों में बहुत ही प्रभाभी ढंग से 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ हुए विद्रोह युद्ध में बाबू कुंवर सिंह एवं उनके भाई अमर सिंह को अंग्रेजी सेनाओं के दाँत खट्टे करते हुए दृश्यावलियां दृष्टिगत है।तो कुछ में 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध के दौरान बाबू कुंवर सिंह, नाना साहब, तात्या टोपे के साथ कालपी से कानपुर तक के मार्च का दृश्य प्रदर्शित किया गया था। पद्मश्री ब्रह्मदेव पण्डित जी के मृण्मय भित्ती शिल्प में खासतौर पर 1858 में आजमगढ़ में अंग्रेजी सेना के साथ बाबू कुंवर सिंह के युद्ध को रूपायित किया गया जिसमें अंग्रेजी सेना को मुँह की खानी पड़ी थी। दूसरी ओर 9 महीने के लौंग मार्च के बाद बाबू वीर कुंवर सिंह अपने गाँव जगदीशपुर आने के लिए नाव से गंगा नदी पार कर रहे थे तभी अंग्रेजी सिपाही की गोली उनके दायें हाथ में लगी।बाबू कुंवर सिंह ने बायें हाथ में तलवार लेकर अपने दायें हाथ को काटकर गंगा माँ को अर्पित कर दिया। बाबू कुंवर सिंह के जीवन के इस मार्मिक एवं महत्वपूर्ण प्रसंग को भी म्यूरल पर रूपायित किया गया था। एक म्यूरल पर आरा स्थित आरा हाउस पर आधिपत्य को लेकर अँग्रेजी फौज एवं बाबू कुंवर सिंह की सेना के साथ भी भयंकर युद्ध के दृश्य को भी प्रदर्शित किया गया था।

इस शिविर में उत्कृष्ट मृण्मय भित्ति शिल्प गढ़े जाएँ इस उद्देश्य से नियमित रूप से कार्यक्रम स्थल पर कला, संस्कृति एवं युवा बिभाग के संयुक्त सचिव आनंद कुमार तथा विभाग के उप सचिव तारानंद वियोगी ने अपनी उपस्थिति से कलाकारों का मनोबल ही नहीं बढ़ाया बल्कि मार्गदर्शन भी देते रहे।

• मनोज कुमार 'बच्चन'

संगीत में गूंजी महासमर की महागाथा

सन् 1857 ई. के भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम रूपी महासमर के महानायक बाबू वीर कुंवर सिंह के 160 वें विजयोत्सव वर्षगांठ के उपलक्ष्य में बिहार सरकार के कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा पहली बार एक साथ पटना एवं जगदीशपुर (आरा) भोजपुर में त्रिदिवसीय कार्यक्रमों की शानदार कला शृंखला का आयोजन किया गया। इन भव्य कार्यक्रमों की शुरूआत मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा पटना श्री कृष्ण मेमोरियल हाल में हुई। इस अवसर पर देश के ख्यातिनाम कलाकारों को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ,उद्योग मंत्री श्री जय कुमार सिंह एवं कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री श्री कृष्ण कुमार ऋषि उपस्थित थे। पटना के साथ ही जगदीशपुर, आरा में भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत की गई।

23 अप्रैल को जगदीशपुर में भोजपुरी के प्रसिद्ध लोक गायक श्री भरत शर्मा व्यास ने जब बाबू वीर कुंवर सिंह की वीरता को अपने गीतों में पिरोकर गाना 'खौलत खून बहल नस नस में, देख के देश के गुलामी, जवानी पाकल मोछ पर आईल कुंवर के जवानी' शुरू किया तब मंच पर वीर कुंवर सिंह जीवंत हो उठे। इस कार्यक्रम में अगली प्रस्तुति छपरा की अनुभूति शांडिल्य की रही, जिन्होंने अपने पिता उदय नारायण सिंह के साथ मिलकर वीर कुंवर सिंह की जीवन गाथा को अपनी विशिष्ट शैली में ई गाथा महासमर के बा ,ई गाथा वीर कुंवर के बा को गा कर दर्शकों को उस दौर की याद दिला दी । इनके साथ-साथ श्री भरत सिंह भारती, दोस्ताना सफर संस्था और श्री सत्येंद्र कुमार संगीत ने भी अपनी प्रस्तुतियों से जगदीशपुर की धरती को ओज और उत्साह से लबरेज कर दिया। वहीं पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में शुरुआत लोक गायकी की विशिष्ट पहचान मालिनी अवस्थी के 'आजादी के दीवानों की सुनी वीर कुंवर ने ललकार ,चमक उठी सन सतावन में बूढ़े हाथों में तलवार' से की। दर्शकों की भारी मांग पर मालिनी अवस्थी ने अपने प्रसिद्ध लोकगीत 'रेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे' गा कर सबका मन मोह लिया। इसके बाद बिहार के चंपारण की लोक गायिका नीतू कुमारी नूतन ने 'कईले देशवा के नाम है जिंदगानी कुँवर सिंह देले अपन कुर्बानी' गाकर दर्शकों में वीर रस की धारा बहा दी। रोहतास के ब्रज किशोर दुबे ने 'धन भोजपुरिया अरे धन है भोजपुर के पानी, अस्सी बरस में जहवां आवेला जवानी' गीत से श्रोताओं के नस नस में जोश भर दिया। इनके साथ साथ युवा गायिका वर्षा कुमारी ने 'हर करम अपना करेंगे ए कुंवर तेरे लिए' से तथा प्रसिद्ध नृत्यांगना सुदीपा घोष ने अपने नृत्य की प्रस्तुति से सुरमई शाम बेहतरीन बना दिया।

दूसरे दिन जगदीशपुर में मालिनी अवस्थी, उषा कुमारी, मोहर्रम राठौर, राजीव रंजन सिंह के साथ-साथ बिहार की प्रसिद्ध लोक गायिका डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने अपनी वीर कुंवर की वीर गाथा को आल्हा शैली की शानदार और जानदार प्रस्तुतियों से विजयोत्सव जगदीशपुर वासियों के लिए यादगार बना दिया।

वहीं दूसरी ओर पटना में इसी दिन श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में ही श्री भरत शर्मा व्यास, अनुभूति शांडिल्य, लक्ष्मी प्रसाद यादव, कुमारी अभिलाषा एवं अनुराधा कुमारी ने अपनी-अपनी जगदीशपुर में प्रस्तुत की गई प्रस्तुतियों को ही पाटलिपुत्र पटना की जनता के सामने पेश किया और खूब वाहवाही लूटी।

तीसरे दिन पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में बिहार के लोक कलाकारों का जलवा रहा। बिहार के भरत सिंह भारती ,डॉ नीतू कुमारी नवगीत, सविता सिंह नेपाली, सत्येंद्र कुमार संगीत, अजीत झा और मुहर्रम राठौर ने बाबू वीर कुंवर सिंह की गाथाओं को अपने अपने अंदाज में पेश किया। प्रसिद्ध लोक गायक भरत सिंह भारती ने 'देश की आजादी के खातिर देले बा कुर्बानी, बाबू कुंवर सिंह बलिदानी' गाकर देशभक्ति के उत्साह, शौर्य और बलिदान की गाथा को जीवंत कर दिया। वही हाथों में घुंघरू बांध कर और ढोलक लेकर मंच पर आते ही मोहर्रम राठौर ने मग्न होकर अपने लोकगीतों में वीर कुंवर सिंह की वीरगाथा को जीवंत किया। प्रसिद्ध लोक गायक सत्येंद्र कुमार संगीत और सविता सिंह नेपाली ने भी क्रमशः अपने-अपने गीतों जैसे 'ए मेरे वतन के लोगों' और 'भारत देश ला लड़े ल लड़ाईया , बाबू कुंवर सिंह सिपहिया' के माध्यम से अपनी गायकी की अनुपम छटा बिखेरी ।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम की आखरी शाम की सबसे बड़ी प्रस्तुति रही प्रसिद्ध लोक गायिका डॉ नीतू कुमारी श्नवगीतश् की आल्हा शैली में संजय कुमार रचित गीत चाहे तो तन छोड़कर जाए, बस इतनी थी यही तमन्ना, भारत मां आजाद कहाय। अजीत झा ने जगदीशपुर में बाजे बधैया, नाचे मिथिला के भैया गाकर सांस्कृतिक कार्यक्रम में मिथिला रंग भरा और साबित कर दिया कि बाबू वीर कुंवर सिंह सिर्फ भोजपुर के ही नहीं बल्कि पूरे बिहार के महानायक थे। इसी दिन जगदीशपुर में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के आखिरी दिन भी देश के नामचीन कलाकारों की कला प्रदर्शन का सिलसिला जारी रहा। चर्चित भोजपुरी गायक रामेश्वर गोप ने वीर कुंवर सिंह गाथा को इस तरह से पेश किया कि लोग जोश में नाचने और झूमने लगे। गवाही जेकर रहे सूरज और चांद ए बबुआ, रहल वीर कुंवर सिंह भोजपुर के जवान ए बबुआ गीत से दर्शकों को भोजपुरिया संगीत की पारंपरिक सोंधी महक महसूस हुई। इनके साथ साथ नीतू कुमारी नूतन, ब्रज किशोर दुबे ,लक्ष्मी प्रसाद यादव और सिमरन श्रुति ने भी अपनी अपनी प्रस्तुतियां दी। इन पूरे कार्यक्रमों के दौरान भिखारी ठाकुर के विदेशिया और महेंद्र मिसिर की पुरबिया शैली के गीतों की प्रस्तुति सबसे खास बात रही।

● अविनाश कुमार झा

बनमनखी में विद्यापति महोत्सव

सुमरित हाईस्कूल में विद्यापति स्मृति पर्व समारोह पर बनमनखी मैथिली मय हो गया। गीत-संगीत के साथ अतिथियों के उद्‌बोधन में मैथिली भाषा की जमकर रसधार बही। जिसकी सौंधी खुशबू में कार्यक्रम स्थली देर रात तक सराबोर होती रही। खासकर मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि एवं डीएम प्रदीप कुमार झा की मैथिली सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो गए। मंत्री ने कहा कि विद्यापति को किसी खास बंधन में नहीं बांधा जा सकता है। उन्होंने कार्यक्रम को व्यापक बनाने के लिए अपनी योजनाओं से भी उपस्थित लोगों को रूबरू कराया। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी प्रदीप कुमार झा ने कहा कि पूर्णियां राज्य की सास्कृतिक राजधानी बनने का माद्दा रखती है। उन्होंने कहा कि विद्यापति सिर्फ मिथिला तक सीमित नहीं,दुनियां भर में जहां भी मैथिली भाषी हैं,विद्यापति उनके लिए प्रासंगिक हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत कवि कोकिल विद्यापति द्वारा रचित जय-जय भैरवी भयावनी असुर भयावनी पर शोभा और कन्हैया के भाव नृत्य से हुई। कुंजबिहारी के कै पतियालय जायत रे और हमर पाहुन कठजामुन लगौलैन तथा अमर आनंद के दुमका में झुमका हरौलैन पर दर्शकों ने खूब ताली बजाई। कुंजबिहारी ने हास्य-परिहास से भी लोगों को गुदगुदाया। स्नेहा झा ने मैया हे सुनियौ गीत पर दर्शकों का मनमोह लिया। कार्यक्रम के दौरान संचालन समिति के अध्यक्ष बीडीओ राघवेन्द्र कुमार के कविता पाठ से लोग हंसते-हंसते लोटपोट होते रहे। ज्यों-ज्यों शाम ढलती गई मैथिली की फुहार से बनमनखी भींगता गया।

कार्यक्रम का एक दिलचस्प हिस्सा रहा। जब सभी अतिथियों के साथ कलाकारों का स्वागत पाग और चादर से किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद पप्पू सिंह सहित कई अधिकारी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे ।

मिथिला में भी होगा खेल का विकास

कला एवं संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि मिथिला-ललित संग्रहालय निर्माण की प्रक्रिया शुरु हो गई है। जिले के सौराठ गांव में लाख की लागत वाली मिथिला की कला संस्कृति व विरासत आधारित संग्रहालय युवा पीढी के अलावा देश-विदेश से आने वाले लोगों को मिथिला की प्राचीन विरासत से अवगत कराएगा।वे मधुबनी के टाउन क्लब मैदान में जानकी सेना के तत्वावधान में मां जानकी महोत्सव समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संग्रहालय के निर्माण से जिले में मिलने वाले प्राचीन अवशेष को संरक्षित रखने में मदद मिलेगी। जिले के 12 अधूरा स्टेडियम का निर्माण कार्य पूरा करने के लिए विभागीय स्तर पर प्रयास तेज कर दिया गया है। राज्य में खेल आयोजन को विकसित किया जा रहा है। बिहार में भी उच्च कोटि का स्टेडियम होगा। खेल-खिलाड़ियों का विकास होगा। खिलाड़ियों के लिए प्रोत्साहन राशि में इजाफा की गई है। मिथिला मां जानकी, महाकवि विद्यापति सहित अनेको विभूतियों की धरती रही है। मैथिली भाषा मिठास से भरी है। मधुबनी के लोग विदेशों में भी अपनी संस्कृति को विकसित कर रहे है। उन्होंने कहा कि मधुबनी से मेरा प्रेम है, मधुबनी के लिए हमेशा मेरा प्रेम रहेगा और उस प्रेम के खातिर ही मधुबनी के सभी स्टेडियम का जांच कर जल्द से जल्द उसे बेहतर बनाने का काम किया जाएगा।

मधुबनी में सभी संभावनाओं को तराशते हुए उसे बेहतर करने का काम विभाग द्वारा किया जाएगा। उन्होंने जानकी सेना के अद्‌भुत कार्यक्रम के लिए बहुत बधाई दी और भविष्य के लिए शुभकामना देते हुए कहा कि जानकी सेना को और मजबूत कर पूरे मिथिला और बिहार में सशक्त बनाना चाहिए और इस प्रकार की नवयुवकों की प्रतिभा बढ़ाने में जानकी सेना की भूमिका के साथ-साथ सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल और मिथिला के रीति-नीति को देश और दुनिया में फैलाने का जो संकल्प लिया है, उसमें मेरा पूरा सहयोग रहेगा। उन्होंने कहा कि मधुबनी की संस्कार, सभ्यता और इसकी परंपरा को पूरे विश्व ने सराहा है। इस अवसर पर आयोजित कायक्रम में उन्होंने जिले के विभिन्न खेलों के प्रतिभागियों की हौसला आफजाई भी की। उन्होंने खेल को खेल की भावना से खेलने के लिए तमाम खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। खेल मंत्री ने कहा जिले में कुल 12 स्टेडियम हैं, जिनकी छह माह के अंदर

एक नई योजना तैयार करके जर्जर स्टेडियम का फिर से नवीकरण कार्य कराया जाएगा। उन्होंने कहा मैं खिलाड़ी होने के नाते खेल प्रेमियों का दर्द समझ सकता हूं। आने वाले समय में खेलाड़ियों को तमाम ऐसी सुविधाएं दी जाएंगी, जो अब तक अन्य राज्यों के खिलाड़ियों को मिलती हैं।यह खेल प्रतियोगिता 15 से 24 अप्रैल तक जारी रही। जिसमें क्रिकेट, कबड्डी, बैडमिंटन, वॉलीवॉल, संगीत, डांस आदि प्रतियोगिता में शामिल है।

हरेक प्रखंड में होगा स्टेडियम

राजगीर में अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बनेगा। इसके लिए बीसीसीआई से संबद्धता व कार्ययोजना पर बात हो चुकी है। साथ ही सूबे के प्रत्येक प्रखंड में स्टेडियम तैयार किया जाएगा, ताकि राज्य के खिलाड़ियों को बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़े। मोइनुलहक स्टेडियम का भी विकास किया जाएगा। यहां अंतरराष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होगा। ये बातें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना सिटी के गुलजारबाग में 1.63 करोड़ रुपये की लागत से बने स्टेडियम का उद्घाटन करने के बाद कही।

सीएम ने कहा कि जिला स्तर पर व्यायामशाला और खेल भवन बनाया जाएगा। इसके साथ ही प्रतिभागी खिलाड़ियों का भोजन भत्ता एक सौ रुपए से बढ़ाकर दो सौ 25 रुपए कर दिया गया है और खेल प्रशिक्षकों का मानदेय 15 हजार रुपए से बढ़ाकर 30 हजार रुपए कर दिया गया है। खिलाड़ियों को दी जाने वाली सम्मान राशि में भी वृद्धि की गयी है। बेहतर खेल प्रशिक्षण के लिए बिहार के खिलाड़ियों को दूसरे राज्य में नहीं जाना पड़ेगा। इसके लिए राज्य सरकार ने खेल-खिलाड़ी, प्रशिक्षण और व्यवस्था को विकसित करने का काम शुरू कर दिया है। प्रत्येक प्रखंड में एक स्टेडियम का निर्माण किया जा रहा है। स्वीकृत 301 स्टेडियम में से 104 स्टेडियम का निर्माण कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा कराया जा चुका है। जिला एवं प्रमंडल स्तर पर खेल को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नीतीश कुमार ने कहा कि जब हमने प्रदेश की बालिकाओं को साइकिल दी तब विपक्ष ने कहा कि इससे छेड़खानी बढ़ेगी। हमने बालिकाओं को जूडो और मार्शल आर्ट सिखाना शुरू किया। गुलजारबाग स्टेडियम में भी मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आत्मरक्षा के लिए सभी लड़कियां मार्शल आर्ट सीखेंगी। जरूरत पड़ने पर मुंहतोड़ जवाब भी देंगी। नीतीश कुमार ने कहा कि कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक पाकर बिहार व देश का नाम रोशन करने वाली श्रेयसी सिंह एवं अन्य खिलाड़ियों को सरकार सम्मानित करेगी। उन्होंने नवनिर्मित स्टेडियम में लाइट की व्यवस्था करने और मैदान में घास लगाने को कहा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना सिटी को ही पुराना पटना व पाटलिपुत्र बताया। उन्होंने कहा कि सम्राट अशोक और चाणक्य जैसे महान व्यक्तित्व ने यहीं से शासन करना सिखाया। यहां की धरती व लोग कला-संस्कृति, साहित्य, संस्कार के लिए पहचाने जाते हैं। खास बात यह है कि पटना सिटी के लोगों को हमने हमेशा हंसते-मुस्कुराते देखा है। सौहार्द्रपूर्ण माहौल में एक खुशहाल जिंदगी जीने की कला इन्हें बखूबी आती है। पथ निर्माण मंत्री नंदकिशोर यादव ने कहा कि गंगा पाथ वे के निर्माण में तेजी आएगी और सेतु के मरम्मत का काम भी तेज किया जाएगा। गांधी सेतु के समानांतर पश्चिम में फोरलेन पुल का निर्माण कराया जाएगा।

कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि बिहार के खिलाड़ी किसी भी मामले में पीछे नहीं हैं। उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए सरकार हरसंभव प्रयास करेगी। खिलाड़ियों का भत्ता बढ़ाया गया है। सूबे में खेल का माहौल तैयार किया जा रहा है। अब गुलजारबाग स्टेडियम को टेबल टेनिस, मार्शल आर्ट, कराटे, चेस, कैरम, फुटबॉल, क्रिकेट आदि खेलों के लिए व्यवस्थित किया जा रहा है। यहां अत्याधुनिक उपकरणों से लैस जिम्नाजियम भी होगा। उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री के सचिव मनीष वर्मा, कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद, डीएम कुमार रवि, मेयर सीता साहू मौजूद थे।

भागलपुर और बेगूसराय में हुए नाट्य समारोह

दो अप्रैल को भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना में विजया वैभव फाउंडेशन, पटना ने विजेदर कुमार तिवारी लिखित मो जफ्फर आलम निर्देशित 'बाबुल मत करो विवाह' एवं भारद्वाज विद्यापीठ, बेगूसराय में बहुरंग, बेगूसराय ने शरद जोशी लिखित अवध कुमार ठाकुर निर्देशित 'अन्धों का हाथी' का मंचन किया। 3 को दिनकर कला भवन, बेगूसराय में मॉडर्न थियेटर फाउंडेशन, बेगूसराय ने प्रेमचंद लिखित परवेज युसुफ निर्देशित 'सवा सेर गेंहूँ', गीत एवं नाट्य विभाग, दरभंगा में द स्पॉटलाइट ने प्रेमचन्द लिखित विनय कुमार सिन्हा नाट्य रूपांतरित 'कफन' उज्जवल राज के निर्देशन में एवं रास बिहारी हाई स्कूल मैदान, मधेपुरा में प्रांगण रंगमंच, मधेपुरा ने अनिल ओझा लिखित अमित आनंद निर्देशित 'शिक्षा का सर्कस' का मंचन किया। 5 को कालिदास रंगालय में लोकपंच, पटना ने बादल सरकार लिखित रविभूषण बबलू निर्देशित 'सारी रात' का मंचन किया।

7 को कालिका नाट्य कला सांस्कृतिक मंच, भागलपुर द्वारा दो दिवसीय 'दियारा सांस्कृतिक महोत्सव' के पहले दिन स्मिता, मुगलसराय ने विजय गुप्ता निर्देशित श्सुनीताश, शारदा नाट्य मंच,धनबाद ने अनिल सिंह निर्देशित श्नाटकवालाश,जय लक्ष्मी नाट्य कला मन्दिरम, जमशेदपुर ने ए बाबू राव निर्देशित 'जरा सोचिए', याशना, भागलपुर ने प्रभात कुमार लिखित अभिषेक निर्देशित 'राम तेरी गंगा' एवं कला सागर, भागलपुर ने रमेश आत्मविश्वास लिखित मनोज पंडित निर्देशित 'विशु राउत' का मंचन किया। 8 को रंग ग्राम जन सांस्कृतिक मंच, भागलपुर ने असगर वजाहत लिखित कपिलदेव रंग निर्देशित 'पाकिटमार रंगमण्डल', युवा संगीत अकादमी, राँची ने ऋषिकेश लाल निर्देशित 'फिरोजा', कटिहार स्कूल ऑफ ड्रामा ने प्रेमचन्द लिखित दीपक पाठक निर्देशित 'सदगति', मुदगलपुरी नाट्य केंद्र, मुंगेर ने कादर खान लिखित मो. जिलानी निर्देशित 'अगर यही रफ्तार रही तो' का मंचन किया।

कालिदास रंगालय, पटना में निर्माण कला मंच एवं प्रवीण सांस्कृतिक मंच, पटना के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय रंगकर्मी प्रवीण स्मृति सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। समारोह के उद्घाटन के बाद युवा रंगकर्मी मो.जॉनी को नाटककार हृषिकेश सुलभ, फिल्म अभिनेता विनीत कुमार एवं मिथिलेश सिंह के कर कमलों से प्रवीण स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। नाट्योत्सव का पर्दा नाद,पटना द्वारा डॉ अखिलेश कुमार जायसवाल लिखित मो. जॉनी निर्देशित 'मृदंगिया' के मंचन से उठा। 9 को प्रवीण सांस्कृतिक मंच, पटना ने जयशंकर प्रसाद लिखित अविजित चक्रवर्ती नाट्य रूपांतरित 'गुंडा' का मंचन विजयेन्द्र कुमार टॉक के निर्देशन में हुआ। 11 को जैबुन नेशा फाउन्डेशन, पटना ने शरदचंद्र चट्टोपाध्याय लिखित जय दीक्षित नाट्य रूपांतरित 'देवदास' का मंचन सिकंदर ए आजम के निर्देशन में हुआ। 13 को पंकज सिंह लिखित विजय कुमार सिंह निर्देशित 'हँसते-हँसते' का मंचन हुआ। 17 को मंथन कला परिषद, पटना ने महेश एलकुंचवार लिखित प्रमोद कुमार त्रिपाठी निर्देशित 'होली', 18 को मधुकर सिंह लिखित ज्ञानी प्रसाद निर्देशित 'कुतुब बाजार', 19 को प्रांगण, पटना ने अरुण सिन्हा लिखित, सोमा चक्रवर्ती निर्देशित नाटक 'इंद्रधनुष' का मंचन किया। 21 को इँडिया, पटना ने दो दिवसीय नाट्य महोत्सव के पहले दिन अनिल ओझा लिखित उदय कुमार सिंह निर्देशित 'सदगति', 22 को आयोजक दल द्वारा अनिता कुमारी लिखित उदय गाँधी निर्देशित 'माँ की गोद' के मंचन से समापन किया। 23 को सरगम आर्ट्स, पटना ने अर्चना सोनी लिखित एवं निर्देशित नाटक 'उसके जाने के बाद', 25 को राग, पटना ने हरिशंकर परसाई लिखित सुनील कुमार राम निर्देशित 'दस दिन का अनसन', 26 को लोक बाग, पटना ने मोहन राकेश लिखित सुमन कुमार निर्देशित 'सुबह से पहले', 27 को आर्ट एन्ड आर्टिस्टको, पटना ने नुरूलएन सिद्धिकी लिखित प्रभात पाण्डेय निर्देशित 'रहने को घर नही' का मंचन किया।

दिनकर कला भवन, बेगूसराय में मॉडर्न थियेटर फाउंडेशन बेगूसराय ने भिखारी ठाकुर लिखित सुशीला कुमारी निर्देशित 'बेटी वियोग' एवं पूर्व मध्य रेलवे सिनियर सेकेंड्री स्कूल, खगौल में एकजुट, पटना ने टैगोर लिखित अमन कुमार निर्देशित 'काबुलीवाला' का मंचन किया। पुन: कालिदास रंगालय पटना में 28 को अक्षरा आर्ट्स, पटना ने अवधेश प्रीत लिखित राणा संतोष कमल निर्देशित 'हमजमीन', 29 को डी एस डी ओ, पटना ने विजय तेंदुलकर लिखित कृष्ण कुमार लिखित 'सखाराम बाइंडर' का मंचन किया।

रंगदर्शन आर्ट ग्रुप, बेगूसराय द्वारा शिवाला स्थान, नोनपुर, बेगूसराय में चार दिवसीय (26 से 29 अप्रैल) रंगदर्शन राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के पहले दिन दि स्टुगलर्स, पटना ने रमेश कुमार रघु निर्देशित 'पेट की भूख' एवं आयोजक दल ने शशिकांत कुमार निर्देशित 'बहुरा गोढिन', दूसरे दिन बहरूपिया आर्ट, मुम्बई ने सर्वज्ञ मोहन निर्देशित 'एम ए पास', फॉर पिलर्स,हरियाणा ने एकलव्य चौधरी निर्देशित 'बेस्ट ऑफ लक', रंगप्रशिक्षु, उत्तर प्रदेश ने गरिमा सक्सेना निर्देशित 'शी मेटर्स बट' का मंचन किया। तीसरे दिन ओपेरा आर्ट सोसाईटी, बेगूसराय ने राजेश जोशी लिखित हरिकिशोर ठाकुर निर्देशित 'नाम क्या है उर्फ अंडा चोर', अनवरत थियेटर ग्रुप, असम ने रीवा तिवारी निर्देशित 'सरयू पार की मोनालिसा', पलटन थियेटर, दरभंगा ने मानव कॉल लिखित अजित कुमार निर्देशित 'पार्क' का मंचन किया। चौथे दिन ग्लोबल आर्ट सोसाईटी, बेगूसराय ने मनीष जोशी लिखित रवि वर्मा निर्देशित 'हम तो ऐसे ही हैं', दी संस्कृति आर्ट, पटना ने रणवीर सिंह लिखित वसुधा कुमारी निर्देशित 'दर्द ए दिल', आयोजक दल ने शशिकांत कुमार लिखित एवं निर्देशित 'ताक धिना-धिन वाह-वाह' का मंचन किया।

● राजन कुमार सिंह

विजयोत्सव 2018:जगदीशपुर

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com